# Den danske skoles sanhgbog

## FØRSTE HÆFTE


| NR. | | SIDE |
|---|---|---|
| 18 | Abraham sad i Mamre Lund | 29 |
| 6 | Der er saa travlt i Skoven | 12 |
| 7 | En lille Nisse rejste | 13 |
| 20 | Gud ske Tak og Lov | 32 |
| 1 | Hist, hvor Vejen slaar en Bugt | 5 |
| 17 | Hvor Skoven dog er frisk | 28 |
| 3 | Højt fra Træets grønne Top | 8 |
| 15 | Højt paa en Gren en Krage | 25 |
| 9 | I Skoven skulde være Gilde | 15 |
| 13 | Jeg vil sjunge om en Helt | 22 |
| 16 | Katten ligger under Kakkelovnen | 26 |
| 5 | Nu lukker sig mit Øje | 11 |
| 19 | Og hør, lille Mo'er | 30 |
| 8 | Og Ræven han lakked | 14 |
| 2 | Pandeben, godt det gror | 6 |
| 14 | Ride, ride, Ranke | 24 |
| 11 | Stork, Stork, Langeben | 20 |
| 12 | Sur, sur, sur | 21 |
| 4 | Søskende jeg kender fem | 10 |
| 10 | Vift stolt | 18 |


## ALLE HÆFTER


| NR. | | HÆFTE | SIDE |
|---|---|---|---|
| 18 | Abraham sad i Mamre Lund | I | 29 |
| 58 | Agnete | III | 96 |
| 27 | Altid frejdig | II | 47 |
| 61 | Bliv hos os, naar Dagen hælder | IV | 109 |
| 90 | Blomst kan visne | V | 159 |
| 47 | Danmark, dejligst Vang og Vænge | III | 82 |
| 73 | Danmarks Ungdom skulderbred | IV | 128 |
| 67 | Dengang jeg drog af Sted | IV | 118 |
| 33 | Dengang jeg var en lille | II | 56 |
| 41 | Den mørke Nat forgangen er | III | 73 |
| 25 | Der er et Land | II | 44 |
| 82 | Der er et yndigt Land | V | 146 |
| 6 | Der er saa travlt i Skoven | I | 12 |
| 59 | Der gaar Dans paa Ribergade | III | 98 |
| 99 | Der staar et Slot i Vesterled | V | 172 |
| 92 | Det haver saa nyligen regnet | V | 162 |
| 85 | Droslen slog | V | 150 |
| 79 | Du gamla, du friska | IV | 135 |
| 7 | En lille Nisse rejste | I | 13 |
| 83 | Flyv, Fugl, flyv | V | 147 |
| 74 | Fra kvabnfulde Mure | IV | 130 |
| 35 | Fred hviler over Land og By | II | 58 |
| 64 | Før var der knap skrevet | IV | 114 |
| 81 | Grøn er Vaarens Hæk | V | 145 |
| 20 | Gud ske Tak og Lov | I | 32 |
| 93 | Helt tungt han efter sig Foden drog | V | 164 |
| 1 | Hist, hvor Vejen slaar en Bugt | I | 5 |
| 87 | Hr. Oluf han rider | V | 154 |
| 72 | Hr. Peder kasted Runer | IV | 126 |
| 70 | Hvor Bølgen larmer | IV | 124 |
| 17 | Hvor Skoven dog er frisk | I | 28 |
| 89 | Høje Nord | V | 158 |
| 3 | Højt fra Træets grønne Top | I | 8 |
| 15 | Højt paa en Gren en Krage | I | 25 |
| 38 | I alle de Riger og Lande | II | 62 |
| 91 | I Danmark er jeg født | V | 160 |
| 46 | I gamle Dage det var engang | III | 81 |
| 9 | I Skoven skulde være Gilde | I | 15 |
| 45 | I Sne staar Urt og Busk | III | 80 |
| 95 | Jag vet ett land | V | 167 |
| 69 | Ja, vi elsker dette Landet | IV | 122 |
| 57 | Jeg danser og drejer | III | 95 |
| 22 | Jeg elsker de grønne Lunde | II | 40 |
| 100 | Jeg gik mig i Lunden | V | 173 |
| 53 | Jeg gik mig ud en Sommerdag | III | 91 |
| 71 | Jeg lagde mit Hoved | IV | 125 |
| 63 | Jeg var en Munk | IV | 112 |
| 13 | Jeg vil sjunge om en Helt | I | 22 |
| 55 | Jylland mellem tvende Have | III | 93 |
| 16 | Katten ligger under Kakkelovnen | I | 26 |
| 23 | Kom Maj, du søde, milde | II | 42 |
| 30 | Kong Kristian | II | 52 |
| 56 | Konning havde sig København | III | 94 |
| 50 | Langt højere Bjærge | III | 86 |
| 98 | Lysets Engel gaar med Glans | V | 171 |
| 68 | Løft dit Hoved | IV | 121 |
| 24 | Marken er mejet | II | 43 |
| 31 | Mellem Brødre kaldt den lille | II | 54 |
| 76 | Moders Navn er en himmelsk Lyd | IV | 132 |
| 21 | Morgenstund har Guld i Mund | II | 39 |
| 37 | Naar kommer Vaaren | II | 60 |
| 44 | Naar Tysken sin tørstige Ganger rider | III | 78 |
| 62 | Nu lakker det ad Tiden smaat | IV | 110 |
| 80 | Nu lider Dagen | IV | 136 |
| 5 | Nu lukker sig mit Øje | I | 11 |
| 65 | Nu vaagne alle | IV | 115 |
| 29 | Og det var en Skærsommerdag | II | 50 |
| 19 | Og hør, lille Mo'er | I | 30 |
| 48 | Og Ræven laa under Birkerod | III | 84 |
| 8 | Og Ræven han lakked | I | 14 |
| 86 | Om Dannemarks Kvide | V | 152 |
| 78 | Paaskeklokken kimed mildt | IV | 134 |
| 26 | Paa Sjølunds fagre Sletter | II | 46 |
| 32 | Paa Tave Bondes Ager | II | 55 |
| 2 | Pandeben, godt det gror | I | 6 |
| 43 | Prinsessen sad i Højeloft | III | 76 |
| 14 | Ride, ride, Ranke | I | 24 |
| 49 | Roselil | III | 85 |
| 54 | Rullende hen ad de støvede Veje | III | 92 |
| 97 | Saa kæmped de Helte | V | 170 |
| 75 | Snart er Natten svunden | IV | 131 |
| 51 | Sol er oppe | III | 88 |
| 39 | Solen synker | II | 63 |
| 52 | Som Solen oprinder | III | 90 |
| 40 | Sov mit Barn | II | 64 |
| 96 | Stemmer i, thi nu ville vi sjunge | V | 168 |
| 36 | Storken sidder paa Bondens Tag | II | 59 |
| 11 | Stork, Stork, Langeben | I | 20 |
| 12 | Sur, sur, sur | I | 21 |
| 4 | Søskende jeg kender fem | I | 10 |
| 42 | Til vor lille Gerning ud | III | 74 |
| 34 | Tog Bremsen Støvler og Sporer paa | II | 57 |
| 28 | Tommeliden | II | 48 |
| 88 | Vårt land, vårt land | V | 156 |
| 94 | Velkommen, Lærkelil | V | 166 |
| 66 | Venner, ser paa Danmarks Kort | IV | 116 |
| 10 | Vift stolt | I | 18 |
| 84 | Vinden er saa føjelig | V | 148 |
| 60 | Vort Modersmaal er dejligt | III | 100 |
| 77 | Vær hilset, mit gamle Fædreland | IV | 133 |